भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर

खम्मा घणी

अप्रैल - जून 2025

खंड -3 वर्ष - 2025 -26 अंक -9

निदेशक महोदय की कलम से

संस्थान की हिंदी समाचार-पत्रिका "खम्मा घणी" के नवीन अंक-9 के विमोचन के अवसर पर मुझे अत्यंत गौरव और प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। पूर्ववर्ती अंकों की भांति यह अंक भी हमारे संस्थान की विविध गतिविधियों, शैक्षणिक एवं शोध उपलब्धियों तथा सांस्कृतिक-सामाजिक योगदान का प्रेरक एवं सारगर्भित चित्र प्रस्तुत करता है। यह अंक न केवल संस्थान की निरंतर प्रगति का प्रमाण है, बल्कि हिंदी भाषा के उपयोग, प्रोत्साहन और संवर्द्धन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को भी सुदृढ़ रूप में अभिव्यक्त करता है।

इस तिमाही में आयोजित 11वें दीक्षांत समारोह ने हमारे संस्थान की श्रेष्ठता और शैक्षणिक उपलब्धियों को उजागर किया। इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा जी की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की महत्ता को बढ़ाया। इसके अतिरिक्त, माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी द्वारा संस्थान का दौरा, अम्बेडकर जयंती कार्यक्रम, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस और योग दिवस जैसे विविध कार्यक्रमों ने हमारे संस्थान की सामाजिक और शैक्षणिक प्रतिबद्धताओं को और सशक्त किया।

हमने इस तिमाही में मानेकशॉ केंद्र का शुभारंभ भी किया, जो संस्थान में अनुसंधान और नवाचार की नई दिशाओं के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र साबित होगा। साथ ही संस्थान में प्राप्त अन्य उत्कृष्ट उपलब्धियाँ और नवाचार भी इस अंक में प्रमुख रूप से प्रकाशित किए गए हैं।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्रकाशक मंडल और हिंदी प्रकोष्ठ के समर्पित प्रयासों की भूरि-भूरि सराहना करता हूँ। उनकी मेहनत और लगन से ही संस्थान की गतिविधियों, कार्यक्रमों और उपलब्धियों को हिंदी माध्यम में प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया जा सका।

आशा है कि हमारा संस्थान राजभाषा हिंदी के विकास और प्रचार-प्रसार में निरंतर अग्रणी भूमिका निभाता रहेगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। मैं इस प्रयास में जुड़े सभी सहयोगियों, शिक्षकों और छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

जय हिंद, जय भारत

प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल
निदेशक

मुख्य संरक्षक

प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल
निदेशक / अध्यक्ष
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

सह - संरक्षक

प्रो. भबानी कुमार सतपथी
उप निदेशक

प्रकाशन मंडल

डॉ. जय नारायण त्रिपाठी
सह-आचार्य,
विद्युतीय अभियांत्रिकी विभाग

डॉ. मयंक सुमन
सहायक आचार्य,
नागरिक एवं आधारभूत अभियांत्रिकी

सुश्री नूतन सिंह
हिंदी भाषा प्रशिक्षक
शिक्षा प्रौद्योगिकी केंद्र

डॉ. नितिन भाटिया
सह-आचार्य, विद्युतीय अभियांत्रिकी
विभाग एवं हिंदी अधिकारी

सम्पादकीय

हमें यह बताते हुए अत्यंत हर्ष है कि संस्थान की हिंदी पत्रिका "खम्मा घणी" का अप्रैल-जून 2025 अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है । संस्थान की दैनिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों को एक ही मंच पर प्रस्तुत करना हम सभी के लिए गर्व का विषय है । हमारा संस्थान राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु निरंतर प्रयासरत है । इसके अंतर्गत प्रशासनिक पत्राचार एवं अन्य कार्यों का द्विभाषी संचालन, कर्मचारियों के लिए हिंदी में अधिकतम कार्य हेतु वार्षिक प्रोत्साहन पुरस्कार योजना, हिंदी टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसी पहलें उल्लेखनीय हैं।

इस अंक में दीक्षांत समारोह 2025 और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के साथ-साथ राष्ट्र की एकता और सामाजिक जागरूकता से जुड़े कार्यक्रमों को प्रमुखता दी गई है, जैसे अम्बेडकर जयंती, नशा मुक्त भारत पखवाड़ा और ओलंपिक दिवस 2025 । इसके अतिरिक्त संस्थान की नई उपलब्धियाँ, समझौता ज्ञापन, हिंदी में रुचि रखने वाले कर्मचारियों की रचनाएँ, तथा संस्थान से जुड़े नए संकाय सदस्यों और कर्मचारियों की जानकारी भी इस अंक की विशेषताएँ हैं।

हम प्रविष्टियाँ देने वाले सभी योगदानकर्ताओं का हृदयपूर्वक धन्यवाद करते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में भी हमें इसी तरह सक्रिय सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही, इस अंक में प्रयुक्त सभी छायाचित्रों के लिए जनसंपर्क कार्यालय का विशेष धन्यवाद।

डॉ. नितिन भाटिया
हिंदी अधिकारी

नोट: इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं, संपादक मंडल का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
संपर्क सूत्र – office_hindi@iitj.ac.in **दूरभाष** - +91 291 2801199
अनुवाद - शुभम पांडे , कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक
कवर डिज़ाइन- शिखा पाराशर, डिज़ीटल कॉन्टेट डिज़ाइनर, शुभम अरोड़ा, डिज़ीटल कॉन्टेट डिज़ाइनर
फोटोग्राफ्स - श्याम सुन्दर शर्मा
डिजाइन और संकलन - करण सिंह राजपुरोहित, आउटसोर्स स्टाफ, हिन्दी प्रकोष्ठ

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	**11वां दीक्षांत समारोह का आयोजन**	06
2.	**माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी द्वारा परिसर का दौरा**	11
3.	**भा.प्रौ.सं. जोधपुर में मानेकशॉ केंद्र का उद्घाटन**	16
4.	**राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस**	17
5.	**अंबेडकर जयंती कार्यक्रम 2025**	18
6.	**भा.प्रौ.सं. जोधपुर में पृथ्वी मिसाइल प्रतिदर्श का उद्घाटन**	19
7.	**भा.प्रौ.सं. जोधपुर में प्रमुख नेतृत्व भूमिकाएँ**	21
8.	**अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025**	22
9.	**नशा मुक्त भारत पखवाड़ा आयोजन**	23
10.	**अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक दिवस 2025**	24
11.	**भा.प्रौ.सं. जोधपुर में ग्रीष्मकालीन स्नातक अनुसंधान (SURAJ-2025)**	26
12.	**“कानून और प्रौद्योगिकी” विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का दूसरा संस्करण**	27
13.	**कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न निवारण (पीओएसएच) अधिनियम, 2013 पर कार्यशाला**	28
14.	**न्यूरोमॉर्फिक और एज AI के लिए सर्किट्स और सिस्टम्स पर सीज़नल स्कूल**	29
15.	**उपलब्धियाँ**	31
16.	**व्यक्तिगत रचनाएँ**	36
17.	**संस्थान में शामिल होने वाले संकाय / कर्मचारी सदस्य**	42-43

11वां दीक्षांत समारोह का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में 26 जून 2025 को अपने संस्थान परिसर में भव्य 11वें दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर का 11वां दीक्षांत समारोह न केवल एक शैक्षिक उत्सव था, बल्कि यह देश के तकनीकी और सामाजिक विकास में युवाओं की भूमिका को भी रेखांकित करता है। इस समारोह में 1,229 स्नातक, स्नातकोत्तर और शोधार्थी छात्रों को उनकी कड़ी मेहनत, समर्पण और उत्कृष्टता के लिए सम्मानित किया गया, जो भारत के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। इस आयोजन में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे, जिन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि वे न केवल तकनीकी कौशल विकसित करें बल्कि समाज और देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी समझें। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की उन्नति भी है। इसके साथ ही उन्होंने तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार और निवेश की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे भारत वैश्विक तकनीकी मानचित्र पर एक मजबूत स्थान बन सके।

दीक्षांत समारोह दो सत्रों में आयोजित किया गया—प्रातःकालीन सत्र स्नातक छात्रों के लिए तथा सायंकालीन सत्र स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट पुरस्कार विजेताओं के लिए। सायंकालीन सत्र में इंफोसिस के सह-संस्थापक श्री सेनापति "क्रिस" गोपालकृष्णन और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. एम. जगदीश कुमार मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए।

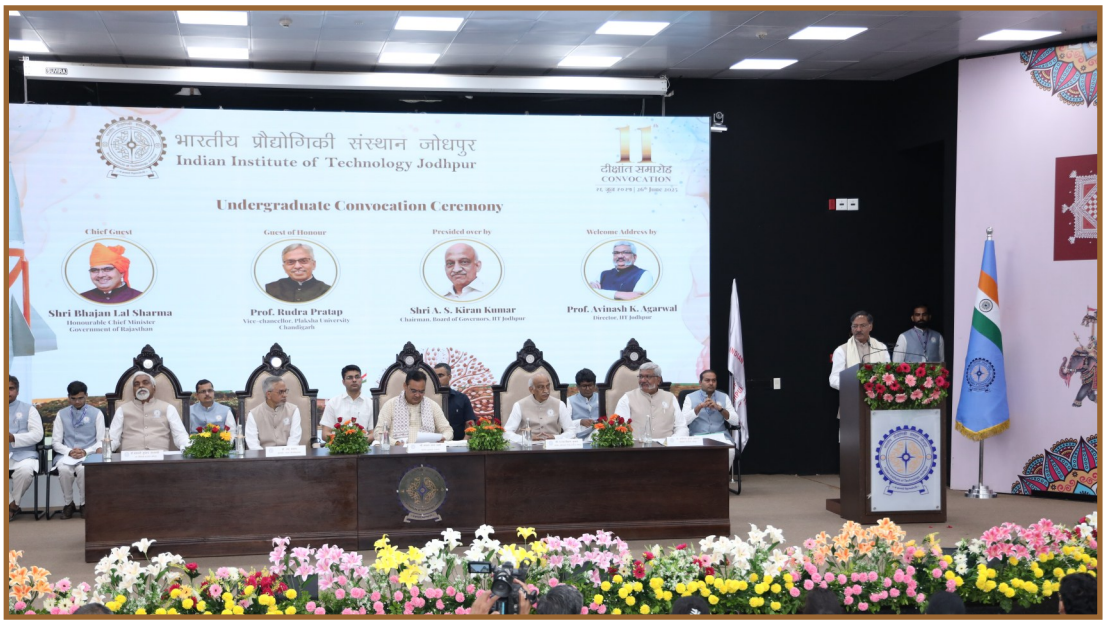

दीक्षांत समारोह के दौरान मुख्य अतिथि श्री भजन लाल जी, प्रो. रुद्र प्रताप जी, श्री ए.एस. किरण कुमार और भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल मंच पर उपस्थित।

राष्ट्रीय सम्मान और मानद उपाधियाँ

दीक्षांत समारोह में तीन राष्ट्रीय दिग्गजों को **डॉक्टर ऑफ साइंस (मानद)** उपाधि प्रदान की गई, जो उनके विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग में उल्लेखनीय योगदान को सम्मानित करती है।

- **डॉ. वी.के. सारस्वत**, सदस्य, नीति आयोग, भारत सरकार
- **प्रो. आशुतोष शर्मा**, पूर्व सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार
- **श्री विपिन सोंधी**, पूर्व प्रबंध निदेशक, अशोक लीलैंड

शैक्षणिक उपलब्धियाँ और कार्यक्रम

इस वर्ष 1,229 छात्रों ने बी.टेक., एम.एससी., एम.टेक., एम.डेस., एमबीए, पीएचडी तथा अन्य स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रमों से डिग्री प्राप्त की।

- बी.टेक. कार्यक्रम में 390 छात्रों ने विभिन्न इंजीनियरिंग शाखाओं में सफलता हासिल की।
- एम.एससी. और एम.टेक. कार्यक्रमों में कुल 422 छात्रों ने स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की।
- एमबीए और अन्य प्रबंधन कार्यक्रमों में 111 छात्रों ने अपनी योग्यता सिद्ध की।
- 65 पीएचडी शोधार्थियों ने डॉक्टरेट की उपाधि ग्रहण की।
- 69 छात्रों को स्नातकोत्तर डिप्लोमा और प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए।

माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल जी और प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल, निदेशक द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के छात्रों को दीक्षांत समारोह में डिग्री प्रदान करते हुए।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने इस अवसर पर अपने 'भा. प्रौ. सं. जोधपुर 5.0' विजन की घोषणा की, जिसके तहत जयपुर और जैसलमेर में नए विस्तार कैंपस स्थापित किए जाएंगे। जयपुर कैंपस में आधुनिक तकनीकी शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए 300 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा, जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा साइंस, डिज़ाइन और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। वहीं, जैसलमेर कैंपस का उद्देश्य ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में शिक्षा की पहुँच बढ़ाना है, ताकि वहाँ के युवा भी उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर सकें और अपने क्षेत्रों के विकास में योगदान कर सकें। यह पहल न केवल शिक्षा के स्तर को बढ़ाएगी बल्कि राजस्थान के सामाजिक-आर्थिक विकास को भी नई दिशा देगी।

इस समारोह में कई प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों और उद्योग जगत के नेताओं को भी सम्मानित किया गया, जिन्होंने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग के क्षेत्र में असाधारण योगदान दिया है। डॉ. वी.के. सारस्वत, प्रोफेसर आशुतोष शर्मा और श्री विपिन सोंधी को डॉक्टर ऑफ साइंस की मानद उपाधि प्रदान की गई, जो उनकी उत्कृष्ट सेवाओं और योगदान की मान्यता है। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल ने अपने उद्बोधन में बताया कि भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने पिछले वर्ष में 107 करोड़ रुपये से अधिक की अनुसंधान परियोजनाएँ पूरी की हैं, 36 पेटेंट दर्ज किए हैं और अनेक नवाचार किए हैं, जो यह दर्शाता है कि यह संस्थान शिक्षा के साथ-साथ औद्योगिक अनुसंधान में भी अग्रणी है। उन्होंने कहा कि भा.प्रौ.सं. जोधपुर का लक्ष्य केवल तकनीकी शिक्षा प्रदान करना नहीं, बल्कि समाज के लिए लाभकारी नवाचारों और परियोजनाओं को विकसित करना है, जो देश के समग्र विकास में योगदान दें।

इस वर्ष के प्लेसमेंट सत्र में भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने अभूतपूर्व सफलता हासिल की है, जहाँ 415 से अधिक जॉब ऑफर प्राप्त हुए और औसत पैकेज 17 लाख रुपये प्रति वर्ष से ऊपर रहा।

•प्लेसमेंट सीजन में 200+ कंपनियों ने भाग लिया, जिनमें माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, हुंडई, एक्सेंचर, टीसीएस आदि प्रमुख हैं।

•बी.टेक. छात्रों के लिए औसत पैकेज ₹17 लाख वार्षिक और एमबीए छात्रों के लिए ₹11.5 लाख वार्षिक रहा, जबकि उच्चतम पैकेज ₹56 लाख वार्षिक तक पहुंचा।

•अनुसंधान परियोजनाओं में ₹107 करोड़ से अधिक धनराशि मिली, जिनमें जनरेटिव AI, साइबर सुरक्षा, स्मार्ट टेक्सटाइल्स शामिल हैं।

संस्थान के तहत 51 स्टार्टअप सक्रिय हैं, जो मेडटेक, डिजिटल हेल्थ, क्लीनटेक, और एआर/वीआर जैसे क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

यह उपलब्धि छात्रों की उत्कृष्टता और संस्थान की प्रतिष्ठा का द्योतक है। इस सफलता ने छात्रों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रोत्साहित किया है और यह प्रमाणित किया है कि भा.प्रौ.सं. जोधपुर न केवल शिक्षा का केंद्र है बल्कि उद्योग और वैश्विक बाजार के लिए उच्च गुणवत्ता वाले पेशेवर तैयार करने वाला प्रमुख संस्थान भी है। दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथियों ने छात्रों को तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ नेतृत्व, उद्यमिता, और सामाजिक जिम्मेदारी की अहमियत को भी समझाया, ताकि वे न केवल तकनीकी रूप से सक्षम बनें, बल्कि समाज के जागरूक और जिम्मेदार नागरिक भी बनें। इस प्रकार यह समारोह एक प्रेरणादायक मंच साबित हुआ, जिसने छात्रों, शिक्षकों और समाज के सभी हितधारकों को मिलकर देश के उज्जवल भविष्य के निर्माण के लिए एकजुट किया।

संस्थान ने भविष्य के लक्ष्यों को भी साझा किया, जिनमें शिक्षा की गुणवत्ता को और बेहतर बनाना, अनुसंधान को बढ़ावा देना और उद्योग के साथ नए सहयोग स्थापित कर छात्रों के लिए रोजगार एवं उद्यमिता के अवसर बढ़ाना शामिल है। भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने यह स्पष्ट किया कि वे तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में एक विश्व स्तरीय संस्थान बनने की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं, जहाँ नवाचार, समावेशन और गुणवत्ता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। इस दीक्षांत समारोह ने न केवल भा.प्रौ.सं. जोधपुर के छात्रों और संकाय सदस्यों के लिए गर्व का क्षण प्रस्तुत किया, बल्कि पूरे देश को यह संदेश दिया कि भारत की युवा पीढ़ी तकनीकी, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए पूरी तरह सक्षम है और वे आने वाले वर्षों में देश को वैश्विक मानचित्र पर नई ऊंचाइयों तक ले जाएंगे। भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने एक बार फिर यह सिद्ध किया कि वह तकनीकी शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान के रूप में अपनी स्थिति को दृढ़ता से कायम रखेगा और देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

दीक्षांत समारोह के दौरान मुख्य अतिथि श्री भजन लाल जी, प्रो. रुद्र प्रताप जी, श्री ए.एस. किरण कुमार और भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल के साथ समूह छायाचित्र।

कार्यक्रम के अन्य छायाचित्र

माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी द्वारा परिसर का दौरा

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के लिए 9 जून 2025 का दिन अत्यंत गौरवशाली और ऐतिहासिक साबित हुआ, जब लोकसभा के माननीय अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी ने संस्थान का दौरा किया और नव विकसित व्याख्यान कक्ष- II का भव्य उद्घाटन किया। इस अवसर पर शैक्षणिक बुनियादी ढांचे के विस्तार एवं कई दूरदर्शी शैक्षणिक तथा आउटरीच पहलों की शुरूआत की गई, जिसने भा.प्रौ.सं. जोधपुर को तकनीकी शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में नए आयामों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह व्याख्यान कक्ष- II कुल 3,381 वर्ग मीटर क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसका निर्माण संस्थान के आंतरिक संसाधनों से 14.80 करोड़ रुपये की लागत से किया गया है। इस अत्याधुनिक शिक्षण परिसर में तीन आधुनिक शिक्षण कक्ष शामिल हैं, जिनमें प्रत्येक में 160 छात्र / छात्राओं के बैठने की व्यवस्था है। ये कक्ष स्तरीय बैठने, स्मार्ट पोडियम, अत्याधुनिक ऑडियो-विजुअल उपकरणों और आरामदायक व सुव्यवस्थित वातावरण के साथ डिज़ाइन किए गए हैं, जो शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, भवन में बहुउद्देश्यीय हॉल भी है, जो पाठ्यचर्या के साथ-साथ सह-पाठयक्रम गतिविधियों के लिए उपयुक्त है। इस पूरी संरचना को सार्वभौमिक पहुंच के दृष्टिकोण से बनाया गया है, जिसमें रैंप, लिफ्ट और सुविधा संपन्न टॉयलेट शामिल हैं ताकि सभी उपयोगकर्ता, विशेष रूप से विकलांग, सहजता से इसका लाभ उठा सकें। साथ ही, यह इमारत ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी मॉडल है, जिसमें इन्सुलेटेड डबल दीवारें, थर्मल लोड कम करने के लिए डीजीयू के साथ यूपीवीसी दरवाजे और खिड़कियां लगाई गई हैं, जिससे ऊर्जा की बचत सुनिश्चित होती है।

माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी एवं भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल जी द्वारा व्याख्यान कक्ष परिसर-II का उद्घाटन एवं संबोधन।

श्री ओम बिरला जी ने इस अवसर पर "खेल खेल में विज्ञान" नामक बहुभाषी कॉमिक बुक श्रृंखला का भी उद्घाटन किया, जो भा.प्रौ.सं. जोधपुर के शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (CET) और स्कूल ऑफ डिजाइन द्वारा विकसित की गई है। यह श्रृंखला विशेष रूप से छोटे बच्चों के लिए तैयार की गई है, जो विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और गणित (STEM) के जटिल विषयों को सरल, मजेदार और आकर्षक कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत करती है। इस श्रृंखला की खास बात यह है कि इसे 12 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित किया गया है, जिसमें अंग्रेजी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, गुजराती और बंगाली प्रमुख हैं। यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के लक्ष्यों के अनुरूप है, जो मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहित करती है ताकि छात्रों की वैचारिक समझ में सुधार हो और शिक्षा अधिक समावेशी तथा प्रभावशाली बने। इस कार्यक्रम के दौरान श्रृंखला की पहली दो स्टोरीबुक का विमोचन भी किया गया, जिससे बच्चों को विज्ञान के प्रति उनकी जिज्ञासा बढ़ाने का एक अनूठा अवसर मिला।

माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी, भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल जी और अन्य मंचाधीन द्वारा "खेल खेल में विज्ञान" बहुभाषी पुस्तक का उद्घाटन।

माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी द्वारा वेबसाइट का उद्घाटन

कार्यक्रम में भा.प्रौ.सं. जोधपुर की वेबसाइट के पुनः डिज़ाइन का भी परिचय कराया गया, जिसने डिजिटल नवाचार और सूचना प्रबंधन में एक नई क्रांति ला दी है। वेबसाइट में विकेन्द्रीकृत सामग्री प्रबंधन प्रणाली लागू की गई है, जो अधिकृत उपयोगकर्ताओं को वास्तविक समय में सामग्री को अपडेट करने की सुविधा प्रदान करती है। इसके साथ ही, सामग्री की समाप्ति और अभिलेखीयता के लिए कड़ी नीति बनाई गई है, जिससे वेबसाइट की सामग्री हमेशा अद्यतन, सुलभ और पारदर्शी बनी रहती है। इस डिजिटल नवाचार से संस्थान की सूचना प्रसार क्षमता और प्रभावशीलता में वृद्धि हुई है।

दिन के अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में 18 नव नियुक्त संकाय सदस्यों को शोध नवाचार अनुदान (RIG) से सम्मानित किया गया, जिसकी कुल निधि राशि ₹3.615 करोड़ है। यह अनुदान उन शोधकर्ताओं को प्रारंभिक चरण के अनुसंधान के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है, जो एआई, स्वच्छ ऊर्जा, स्थिरता, स्वास्थ्य देखभाल प्रौद्योगिकियों और उन्नत सामग्रियों जैसे उभरते क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। इस पहल का उद्देश्य भा.प्रौ.सं. जोधपुर में एक सक्रिय, नवीन और जीवंत अनुसंधान संस्कृति को बढ़ावा देना है, जो युवा संकाय सदस्यों को स्वतंत्र और प्रभावशाली शोध करने के लिए प्रेरित करती है और उन्हें उनके शैक्षणिक करियर की शुरुआत से ही मजबूत समर्थन प्रदान करती है। यह दर्शाता है कि संस्थान न केवल शिक्षा में उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्ध है, बल्कि अनुसंधान और नवाचार में भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए और भा.प्रौ.सं. जोधपुर की दूरदर्शी नेतृत्व क्षमता, शैक्षणिक उत्कृष्टता और सामाजिक प्रभाव को सराहा। उन्होंने कहा कि ऐसे आधुनिक और समावेशी शिक्षण केंद्र देश के तकनीकी और नवाचार क्षेत्र को नई ऊँचाइयों पर ले जाएंगे, जिससे भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि होगी। उनके प्रेरक शब्दों ने सभी उपस्थितों को उत्साहित किया और भा.प्रौ.सं. जोधपुर के उज्ज्वल भविष्य की उम्मीदें और भी बढ़ा दीं।

माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी, भा.प्रौ.सं. जोधपुर में शिक्षा, विज्ञान और नवाचार पर अपने विचार साझा करते हुए।

इस अवसर पर भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल ने एक स्वागत भाषण दिया, जिसमें उन्होंने संस्थान के समग्र विकास और भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भा.प्रौ.सं. जोधपुर एक ऐसा परिवर्तनकारी शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध है जो विश्व स्तरीय अनुसंधान, अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे और सामाजिक प्रासंगिकता को सफलतापूर्वक जोड़ता है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि भा.प्रौ.सं. जोधपुर में नवाचार का क्षेत्र एआई, स्वच्छ ऊर्जा, राष्ट्रीय सुरक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसी अहम विषयों में निरंतर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा, "हमारा ध्यान भारतीय मूल्यों और वैश्विक आकांक्षाओं के समन्वय में एक समावेशी और भविष्य-केंद्रित शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने पर है। नव विकसित व्याख्यान कक्ष, बहुभाषी विज्ञान कॉमिक्स, और हमारे आगामी शोध केंद्र जैसी पहल न केवल बुनियादी ढांचे में मील के पत्थर हैं, बल्कि ये संस्थान के उस विश्वास को भी दर्शाती हैं, जो शिक्षा को केवल कक्षा तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे समाज की बड़ी चुनौतियों को हल करने और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए एक सशक्त माध्यम मानती है। यह विकसित भारत @2047 के लिए हमारा महत्वपूर्ण योगदान है।"

कार्यक्रम में अन्य गणमान्य व्यक्तियों जैसे राज्यसभा सांसद श्री राजेंद्र गहलोत और प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता श्री निम्बाराम ने भी शैक्षणिक क्षेत्र में भा.प्रौ.सं. जोधपुर की उपलब्धियों और योगदान की प्रशंसा की। उप निदेशक प्रो. भबानी के. सतपथी ने इस भव्य आयोजन के अंत में माननीय श्री ओम बिरला जी और अन्य सभी गणमान्य व्यक्तियों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया, जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफल और प्रेरणादायक बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया। उन्होंने संस्थान की उत्कृष्टता, नवाचार और राष्ट्र निर्माण की यात्रा को निरंतर प्रेरित करने की प्रतिबद्धता दोहराई।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित छात्र, संकाय सदस्य एवं अन्य दर्शकगण

यह कार्यक्रम भा.प्रौ.सं. जोधपुर के लिए न केवल एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था, बल्कि देश में तकनीकी शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में नए मानक स्थापित करने की दिशा में एक सशक्त कदम भी साबित हुआ।

कार्यक्रम के अन्य छायाचित्र

भा.प्रौ.सं. जोधपुर में मानेकशॉ केंद्र का उद्घाटन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने भारतीय सेना के उप-सेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल राकेश कपूर, एवीएसएम, वीएसएम की गरिमामयी उपस्थिति में राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए मानेकशॉ उत्कृष्टता केंद्र (MCoE-NSSR) का भव्य उद्घाटन किया। यह दिन राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीतिक अनुसंधान के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में दर्ज किया गया यह प्रतिष्ठित केंद्र भारत के महान और दूरदर्शी सैन्य नेता फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ के नाम पर स्थापित किया गया है, जिन्होंने भारतीय सशस्त्र बलों के इतिहास में अपनी निर्णायक भूमिका और अद्वितीय नेतृत्व के लिए स्थान बनाया। इस केंद्र की स्थापना का उद्देश्य यूएवी (Unmanned Aerial Vehicles), ड्रोन-रोधी प्रणाली, निर्देशित ऊर्जा हथियार, और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए उभरती प्रौद्योगिकियाँ जैसे अत्यंत संवेदनशील एवं सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुसंधान, नवाचार और विकास को सशक्त करना रहा। कार्यक्रम के दौरान भा.प्रौ.सं. जोधपुर के शैक्षणिक और प्रशासनिक नेतृत्व, रक्षा अनुसंधान संगठन के विशेषज्ञों, भारतीय सेना के वरिष्ठ अधिकारियों और उद्योग जगत के प्रतिनिधियों की उपस्थिति ने इस पहल को और अधिक प्रभावशाली बना दिया। यह केंद्र एक अंतःविषयक मंच के रूप में कार्य करेगा, जो शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, रक्षा रणनीतिकारों और तकनीकी विशेषज्ञों को एक साथ लाकर, भविष्य की रक्षा चुनौतियों के लिए अत्याधुनिक समाधान विकसित करने की दिशा में सहयोग को प्रोत्साहित करेगा। उद्घाटन समारोह के पश्चात आयोजित वार्ता सत्रों और प्रस्तुतियों में उभरती प्रौद्योगिकियों की रणनीतिक भूमिका और उनके प्रभाव पर विचार-विमर्श हुआ, जिसने यह स्पष्ट किया कि यह केंद्र भारत की रक्षा क्षमताओं को सशक्त करने के साथ-साथ स्वदेशी तकनीक और आत्मनिर्भरता को भी नई दिशा देगा। भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने इस पहल के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया कि तकनीकी शिक्षा संस्थान केवल ज्ञान का केंद्र नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास का रणनीतिक भागीदार भी हैं।

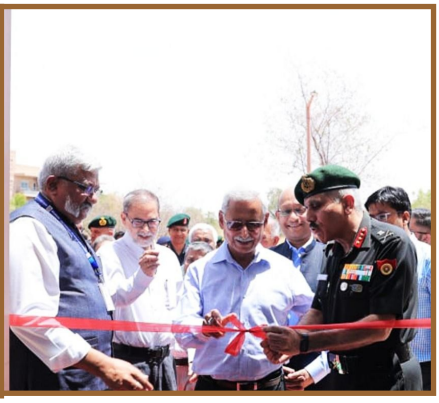

भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए मानेकशॉ उत्कृष्टता केंद्र (एमसीओईएनएसएसआर) का उद्घाटन किया।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देश की प्रगति तथा नवाचार की शक्ति को मान्यता देने हेतु 16 मई 2025 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस एवं विश्व रचनात्मकता और नवाचार दिवस का गौरवपूर्ण आयोजन किया। इस अवसर पर चाणक्य भवन के सीनेट कक्ष में एक आकर्षक सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें भारत की तकनीकी उपलब्धियों, नवाचार में रचनात्मकता की भूमिका, और आत्मनिर्भर भविष्य के निर्माण पर गहन विचार-विमर्श किया गया। यह आयोजन प्रतिभाशाली विचारकों, विशेषज्ञों, शिक्षाविदों एवं विद्यार्थियों को एक मंच पर एकत्रित करने में सफल रहा, जिन्होंने तकनीकी प्रगति और सामाजिक नवाचार के विभिन्न आयामों पर अपने विचार साझा किए। यह कार्यक्रम न केवल वैज्ञानिक उपलब्धियों का उत्सव था, बल्कि एक ऐसा मंच भी बना जहाँ नवाचार, रचनात्मकता और तकनीकी समर्पण को भविष्य की प्रेरणा में रूपांतरित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री वी. सचितानंद शेनॉय, निदेशक, रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर (DRDO) द्वारा प्रेरणादायक संबोधन हुआ जिसमे उन्होंने भारत की रक्षा तकनीक में हो रहे बदलावों, नवाचार की अनिवार्यता और स्टार्टअप संस्कृति के महत्व को उजागर किया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अनिल कुमार, कार्यकारी निदेशक, फुटवियर डिजाइन एंड विकास संस्थान जोधपुर उपस्थित रहे। उन्होंने तकनीकी शिक्षा में नवाचार की भूमिका, फुटवियर डिज़ाइन उद्योग में तकनीकी हस्तक्षेप और कौशल विकास को आत्मनिर्भरता का आधार बताया।

मुख्य अतिथि एवं विशिष्ठ अतिथि का स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मान एवं स्वागत

अंबेडकर जयंती कार्यक्रम 2025

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में 14 अप्रैल 2025 को अंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में एक विशेष आयोजन किया गया। यह दिन भारत रत्न प्राप्तकर्ता डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर की जयंती के रूप में मनाया गया, जो भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पकार और सामाजिक न्याय, समानता तथा सशक्तिकरण के प्रतीक माने जाते हैं। इस अवसर पर संस्थान ने डॉ. अंबेडकर की अमूल्य विरासत को सम्मानपूर्वक स्मरण किया और उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का उद्देश्य उनके विचारों को प्रोत्साहित करना और युवाओं को सामाजिक समरसता, बौद्धिक स्वतंत्रता एवं मानवाधिकारों की दिशा में प्रेरित करना था। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करके की गई, जिसमें संस्थान के निदेशक, संकाय सदस्य, छात्रों और कर्मचारियों ने भाग लिया। इसके पश्चात निदेशक महोदय प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल द्वारा स्वागत भाषण दिया, जिसमें उन्होंने डॉ. अंबेडकर के विचारों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला और छात्रों को उनके जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया। मुख्य वक्ता श्री एम. एल. गर्ग, आईजी, बीएसएफ, राजस्थान फ्रंटियर द्वारा डॉ. अंबेडकर के सामाजिक सुधारों, संविधान निर्माण में उनके योगदान और भारतीय लोकतंत्र पर उनके प्रभाव पर विस्तृत प्रकाश डाला। उनके भाषण ने उपस्थित जनसमूह को डॉ. अंबेडकर के जीवन और कार्य की गहराई से समझने का अवसर प्रदान किया। इसके बाद एक भारत श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी) क्लब और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के छात्रों द्वारा विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिनमें नृत्य, संगीत, नाटक और कहानी-वाचन के माध्यम से बाबासाहेब के विचारों, संघर्षों और आदर्शों को सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया। इन प्रस्तुतियों ने डॉ. अंबेडकर के जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावशाली रूप में उजागर किया, जिससे उपस्थित श्रोताओं में गहरी प्रेरणा और सम्मान की भावना जागृत हुई।

समारोह का समापन धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ हुआ, जिसमें सभी ने एक स्वर में डॉ. अंबेडकर के दिखाए मार्ग - समानता, बंधुत्व, और न्याय - पर चलने का संकल्प लिया। यह आयोजन केवल एक स्मरण नहीं था, बल्कि एक प्रेरणा थी कि हम अपने समाज को और अधिक समावेशी, संवेदनशील और न्यायसंगत बनाने की दिशा में सतत प्रयास करें, ठीक वैसे ही जैसे बाबासाहेब ने अपने पूरे जीवन में किया।

मुख्य वक्ता श्री एम. एल. गर्ग, आईजी, बीएसएफ, राजस्थान फ्रंटियर के साथ चर्चा।

भा.प्रौ.सं. जोधपुर में पृथ्वी मिसाइल प्रतिदर्श का उद्घाटन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में भारतीय सेना के उप-सेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल राकेश कपूर, एवीएसएम, वीएसएम की गरिमामयी उपस्थिति में पृथ्वी मिसाइल प्रतिदर्श का एक भव्य और गौरवपूर्ण उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया । यह ऐतिहासिक अवसर भारत की सामरिक उत्कृष्टता, आत्मनिर्भरता और रक्षा नवाचार की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा गया । पृथ्वी मिसाइल, जिसे भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) द्वारा एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP) के अंतर्गत विकसित किया गया , देश की पहली स्वदेशी बैलिस्टिक मिसाइल के रूप में जानी जाती है। इसने भारत के आधुनिक मिसाइल शस्त्रागार की नींव रखी और दशकों से देश की सामरिक क्षमताओं को सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभाई । उद्घाटन समारोह के दौरान भारतीय सेना, डीआरडीओ और भा.प्रौ.सं. जोधपुर के शीर्ष नेतृत्व सहित अनेक विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति रही, जिन्होंने इस ऐतिहासिक क्षण को साझा किया और भारत की रक्षा क्षमताओं की प्रगति पर गर्व व्यक्त किया । यह प्रतिष्ठित स्थापना केवल भारत के रक्षा नवाचार को श्रद्धांजलि नहीं थी, बल्कि यह भा.प्रौ.सं. जोधपुर के छात्रों, शोधकर्ताओं और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम कर रहे अगली पीढ़ी के नवाचारकर्ताओं के लिए एक सशक्त प्रेरणा स्रोत भी बनी। इस पहल के माध्यम से संस्थान ने न केवल राष्ट्र की सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया, बल्कि रक्षा एवं उच्च तकनीक अनुसंधान के क्षेत्र में अपनी सक्रिय भूमिका को भी मजबूती से स्थापित किया।

पृथ्वी मिसाइल प्रतिदर्श के उद्घाटन समारोह का समूह छायाचित्र

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के निदेशक प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल ने राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए मानेकशॉ उत्कृष्टता केंद्र के शुभारंभ के अवसर पर एक प्रभावशाली स्वागत भाषण दिया, जिसमें उन्होंने केंद्र के महत्व और इसके उद्देश्य पर एक सशक्त दृष्टिकोण प्रस्तुत किया उन्होंने कहा कि मानेकशॉ उत्कृष्टता केंद्र केवल एक अनुसंधान केंद्र नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक दृष्टिकोण है जिसे कार्यरूप दिया गया है, जो विघटनकारी और नवीन समाधानों को विकसित करने तथा भारत को आत्मनिर्भर और भविष्य के लिए सुरक्षित बनाने के लिए एक सहयोगी बल के रूप में कार्य करेगा। प्रोफेसर अग्रवाल ने इस केंद्र को नवाचार, राष्ट्रीय सुरक्षा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पहल बताया, जो देश की रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने और अगली पीढ़ी के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और विशेषज्ञों को प्रेरित करने का माध्यम बनेगा। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि भा.प्रौ.सं. जोधपुर इस मिशन के प्रति प्रतिबद्ध है और सतत विकास, सुरक्षा और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। इस समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों और शोधकर्ताओं ने भी इस केंद्र की भूमिका और इसके संभावित प्रभावों की सराहना की। इस प्रकार, मानेकशॉ उत्कृष्टता केंद्र के शुभारंभ ने भा.प्रौ.सं. जोधपुर को राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों पर ले जाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में अपनी पहचान स्थापित की।

मानेकशॉ केंद्र सिर्फ़ एक केंद्र नहीं है - यह एक दृष्टि है जिसे कार्यरूप दिया गया है। यह क्रांतिकारी समाधानों को आकार देने और एक आत्मनिर्भर, भविष्य-तैयार भारत को सुरक्षित करने के लिए एक सहयोगी बल है।
- प्रोफ़ेसर अविनाश कुमार अग्रवाल, निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जोधपुर

ई-सरल हिंदी वाक्य कोश

According to Rules.	**नियमानुसार**
Approved.	**अनुमोदित**
Copy Enclosed.	**प्रति संलग्न**
Forwarded Please.	**अग्रेषित**
May Kindly Accord Sanction, Please.	**कृपया स्वीकृति प्रदान करने का कष्ट करें**
This is For Your Information Please.	**कृपया यह आपके सूचनार्थ प्रस्तुत है।**
May The Proposal Be Accepted.	**प्रस्ताव स्वीकार किया जा सकता है।**
Permitted.	**अनुमति प्रदान की गई।**
Please Discuss.	**कृपया चर्चा करें।**

भा.प्रौ.सं. जोधपुर में प्रमुख नेतृत्व भूमिकाएँ

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में प्रमुख नेतृत्व भूमिकाओं के लिए चार प्रतिष्ठित पेशेवरों के स्वागत की घोषणा 9 अप्रैल 2025 को आयोजित अधिष्ठाता की बैठक में की गई, जिससे संस्थान में नेतृत्व और नवाचार की एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। संस्थान के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल ने सभी नव-नियुक्त अधिकारियों का स्वागत पौधा भेंट कर किया, जो विकास, जिम्मेदारी और नई शुरुआत का प्रतीक है। इस अवसर पर प्रो. भबानी के. सतपथी को संस्थान के उप निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया, जो शैक्षणिक रणनीति, संस्थागत शासन और नीति कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। डॉ. अंकुर गुप्ता को अधिष्ठाता, अंतर्राष्ट्रीय संबंध (DOIR) नियुक्त किया गया, जो भा.प्रौ.सं. जोधपुर के वैश्विक आउटरीच, साझेदारी और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की पहलों का नेतृत्व करेंगे। डॉ. आशीष माथुर को अधिष्ठाता, डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर और ऑटोमेशन (DDIA) बनाया गया, जो संस्थान के निर्बाध संचालन के लिए डिजिटल शासन, आईटी सिस्टम और स्वचालन की रणनीति और क्रियान्वयन की जिम्मेदारी संभालेंगे। वहीं, मेजर जनरल संजय रिहानी (सेवानिवृत्त) को सलाहकार, बुनियादी ढाँचा नियुक्त किया गया, जो रणनीतिक दृष्टिकोण से संस्थान के भौतिक बुनियादी ढाँचे के विकास का मार्गदर्शन करेंगे। इन सभी नियुक्तियों के साथ, भा.प्रौ.सं. जोधपुर अपने उत्कृष्टता के अगले चरण की ओर अग्रसर है और संस्थान को उनके कुशल नेतृत्व से नई ऊँचाइयों तक पहुँचने की आशा है।

मेजर जनरल संजय रिहानी (सेवानिवृत्त), सलाहकार (बुनियादी ढांचा) / प्रो. भबानी कुमार शतपथी, उप निदेशक / डॉ. आशीष माथुर, अधिष्ठाता, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर और ऑटोमेशन (डीडीआईए) / डॉ. अंकुर गुप्ता, अधिष्ठाता, अंतर्राष्ट्रीय संबंध (डीओओआर) के रूप में नियुक्ति

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने बड़े उत्साह के साथ 21 जून 2025 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के प्रमुख कार्यक्रम "योग संगम" का आयोजन किया जिसमें छात्र, संकाय और कर्मचारी प्रातःकाल सूर्योदय के समय एकत्रित होकर योग अभ्यास के माध्यम से सामंजस्य, संतुलन और स्वास्थ्य की भावना को आत्मसात किया। खुले वातावरण में, प्रकृति की गोद में आयोजित इस योग सत्र ने सभी प्रतिभागियों में नई ऊर्जा, मानसिक शांति और शारीरिक स्फूर्ति का संचार किया। इस आयोजन ने न केवल एकता और सहयोग की भावना को प्रबल किया, बल्कि एक स्वस्थ, संतुलित एवं जागरूक जीवनशैली की ओर संस्थान की प्रतिबद्धता को भी उजागर किया। 2025 की अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग" थी, जिसने योग को एक समावेशी, सुलभ और वैज्ञानिक पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया। योग प्रशिक्षक श्री ललित भारती के नेतृत्व में इस कार्यक्रम में सामान्य योग प्रोटोकॉल का प्रदर्शन किया गया, जिसमें संस्थान के उप निदेशक महोदय प्रो. भबानी कुमार सतपथी मुख्य अतिथि थे। आयोजन स्थल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर परिसर की आकाश बिल्डिंग (स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स) में था। इस कार्यक्रम में पहले तीन सौ प्रतिभागियों को टी-शर्ट भी वितरित की गई। यह आयोजन संस्थान समुदाय के सदस्यों, उनके परिवारों और मित्रों के लिए एक यादगार अनुभव साबित हुआ, जिसने सामूहिक योग अभ्यास के माध्यम से एकता, कल्याण और स्वास्थ्य की भावना को और मजबूत किया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2025 के अंतर्गत मुख्य अतिथि एवं छात्रों द्वारा योग प्रदर्शन

नशा मुक्त भारत पखवाड़ा आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने "नशा मुक्त भारत पखवाड़ा" के अंतर्गत नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB) के सहयोग से एक प्रभावशाली जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं एवं शैक्षणिक समुदाय को नशीले पदार्थों की लत से होने वाले शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना और नशा मुक्त समाज की दिशा में सकारात्मक पहल करना था। इस आयोजन में विषय विशेषज्ञों, अधिकारियों एवं छात्रों ने भाग लिया। वक्ताओं ने नशा विरोधी कानूनों, रोकथाम के उपायों और युवा वर्ग की भूमिका पर विस्तृत चर्चा की। कार्यक्रम के अंतर्गत संवादात्मक सत्र, पोस्टर प्रजेंटेशन और प्रतिज्ञा ग्रहण जैसे विभिन्न गतिविधियाँ भी आयोजित की गईं। यह पहल संस्थान की सामाजिक प्रतिबद्धता को दर्शाती है तथा एक स्वस्थ, जागरूक और उत्तरदायी भारत के निर्माण में योगदान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यक्रम के अंतर्गत वक्ताओं का उद्बोधन, सपथ ग्रहण एवं सामूहिक छायाचित्र

"एक समय में एक काम करो, ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमें डाल दो और बाकी सब कुछ भूल जाओ।"

- स्वामी विवेकानंद

अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक दिवस 2025

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में 23 जून को ओलंपिक दिवस का आयोजन अत्यंत उत्साह, उमंग और ऊर्जा के साथ किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य संस्थान में खेल, स्वास्थ्य जागरूकता और वैश्विक एकता की भावना को बढ़ावा देना था। यह आयोजन आकाश बिल्डिंग, स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में सम्पन्न हुआ, जहां संस्थान के विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं आउटसोर्स कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस अवसर पर आधुनिक ओलंपिक खेलों के संस्थापक माने जाने वाले बैरोन पियरे डी कूबरटिन को श्रद्धांजलि अर्पित की गई, जिन्होंने 1896 में आधुनिक ओलंपिक खेलों की शुरुआत कर खेलों के माध्यम से विश्वभर के लोगों को एक मंच पर लाने का अद्वितीय कार्य किया। उनके इस प्रयास ने वैश्विक एकता और प्रतिस्पर्धा की एक ऐसी परंपरा को जन्म दिया जो आज भी विश्वभर में सम्मान और प्रेरणा का स्रोत है। इस वर्ष ओलंपिक दिवस की थीम "चलें आगे" रही, जिसका उद्देश्य लोगों को अधिक सक्रिय जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना तथा शारीरिक गतिविधियों के महत्व को उजागर करना था। कार्यक्रम की शुरुआत उद्घाटन समारोह के साथ हुई, जिसमें संस्थान के निदेशक के सलाहकार प्रोफेसर एस. आर. वडेरा ने अपने प्रेरणादायक संबोधन से प्रतिभागियों को ओलंपिक मूल्यों, खेल भावना और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी। इसके पश्चात प्रतिभागियों को एक विशेष वीडियो प्रस्तुति के माध्यम से ओलंपिक आंदोलन के इतिहास, उद्देश्य और बैरोन कूबरटिन के योगदान के बारे में जानकारी दी गई। कार्यक्रम के अगले चरण में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें 100 मीटर दौड़, पावरलिफ्टिंग, पुश-अप्स, पुल-अप्स, कबड्डी, वॉलीबॉल, फुटबॉल और बैडमिंटन जैसी प्रतिस्पर्धाएं शामिल थीं। इन खेलों को विभिन्न आयु वर्गों और ओपन कैटेगरी में विभाजित कर सभी प्रतिभागियों को समान और निष्पक्ष अवसर प्रदान किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक दिवस 2025 के दौरान समूह छायाचित्र

अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक दिवस 2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिता एवं व पुरस्कार वितरण के छायाचित्र

इस आयोजन की सबसे विशेष बात यह रही कि इन प्रतियोगिताओं में केवल छात्र ही नहीं, बल्कि संकाय सदस्य, प्रशासनिक कर्मचारी एवं आउटसोर्स कर्मचारी भी पूरे उत्साह और खेल भावना के साथ सहभागी बने, जिससे संपूर्ण संस्थान की भागीदारी और सामूहिकता स्पष्ट रूप से दिखाई दी। कार्यक्रम के अंत में सभी विजेताओं और प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र, मेडल और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया, जिससे उनमें भविष्य में भी सक्रिय रूप से खेलों में भाग लेने की प्रेरणा जागृत हो सके। समापन समारोह के दौरान आयोजकों और प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया, और इस प्रकार यह आयोजन न केवल सफल रहा, बल्कि संस्थान में स्वास्थ्य, सहयोग और सामूहिकता की भावना को और अधिक सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हुआ। ओलंपिक दिवस जैसे आयोजनों के माध्यम से भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने यह सिद्ध किया कि तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य और वैश्विक मूल्यों की शिक्षा भी अत्यंत आवश्यक है।

भा.प्रौ.सं. जोधपुर में ग्रीष्मकालीन स्नातक अनुसंधान (SURAJ-2025)

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने विज्ञान एवं तकनीकी अनुसंधान के प्रति गहरी रुचि रखने वाले प्रतिभाशाली छात्रों के लिए ग्रीष्मकालीन स्नातक अनुसंधान कार्यक्रम (SURAJ-2025) का सफल आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बी.टेक., बी.एस. और एम.एससी के छात्रों को अत्याधुनिक अनुसंधान पद्धतियों, नवीन प्रयोगों तथा उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण का अनुभव प्रदान करना था। दो माह की इस गहन इंटर्नशिप अवधि में चयनित छात्रों को भा.प्रौ.सं. जोधपुर के अनुभवी एवं विशेषज्ञ संकाय सदस्यों के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में कार्य करने का अवसर मिला, जिससे वे न केवल शोध विधियों को समझ सके बल्कि समस्या-समाधान कौशल, आलोचनात्मक सोच और नवाचार क्षमता को भी विकसित कर सके। SURAJ-2025 के अंतर्गत छात्रों को संस्थान की अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं, उन्नत शोध उपकरणों, आधुनिक कम्प्यूटिंग संसाधनों और विवेकपूर्ण शैक्षणिक सुविधा उपलब्ध कराई गई, जिसने उन्हें वास्तविक प्रयोगधर्मिता को गहराई से समझने और अनुसंधान के नए आयामों को खोजने का अवसर प्रदान किया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को प्रति माह ₹6000 की छात्रवृत्ति (अधिकतम दो माह के लिए) प्रदान की गई। इंटर्नशिप के समापन पर छात्रों को अपने शोध परियोजना को पोस्टर और मौखिक प्रस्तुति के माध्यम से प्रदर्शित करने का अवसर मिला, जिसमें सर्वश्रेष्ठ परियोजना को विशेष पुरस्कार एवं सम्मान से भी नवाज़ा गया।

यह कार्यक्रम भविष्य में भा.प्रौ.सं. जोधपुर के पीएचडी छात्रों के लिए एक सुनहरा अवसर भी प्रदान किया। SURAJ-2025 विशेष रूप से उन्हीं बी.टेक./बी.एस. छात्रों के लिए उपलब्ध था जो राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों से थे तथा जिनके संस्थानों का भा.प्रौ.सं. जोधपुर के साथ समझौता (MoU) था। पात्रता हेतु न्यूनतम 7.0/10 का सीजीपीए अनिवार्य रखा गया था, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि चयनित छात्र अकादमिक रूप से सक्षम और शोध के प्रति गंभीर हों। आवेदन प्रक्रिया 1 अप्रैल 2025 से प्रारंभ होकर 15 अप्रैल 2025 तक चली, जिसके बाद 20 अप्रैल 2025 को चयनित छात्रों की सूची जारी की गई। इंटर्नशिप 5 मई 2025 से प्रारंभ हुई और 20 जुलाई 2025 को सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

SURAJ-2025 उन प्रतिभागियों के लिए एक असाधारण सीखने का अनुभव सिद्ध हुआ जिन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के ज्ञान-संपन्न, प्रेरणादायक और अग्रणी शैक्षणिक माहौल में अपने शोध सफर की शुरुआत की। इस कार्यक्रम के माध्यम से छात्रों को न केवल अकादमिक प्रगति का अवसर मिला बल्कि शोध की दुनिया में आत्मविश्वास, दृष्टि और दिशा भी प्राप्त हुई, जो उनके भविष्य के वैज्ञानिक एवं तकनीकी भविष्य को नई उड़ान देती है।

“कानून और प्रौद्योगिकी” विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का दूसरा संस्करण

5 अप्रैल 2025 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में विधि एवं प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय कार्यशाला का दूसरा संस्करण सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें विधि और उभरती प्रौद्योगिकियों के बीच गतिशील और जटिल अंतर्संबंधों को समझने एवं विस्तृत रूप से चर्चा करने का महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया गया। उद्घाटन सत्र में भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए तकनीकी विकास और विधिक व्यवस्थाओं के समन्वय की आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, जोधपुर की कुलपति प्रो. (डॉ.) हरप्रीत कौर ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई और दोनों संस्थानों के बीच सहयोग की महत्वता पर प्रकाश डाला। साथ ही, माननीय न्यायमूर्ति अनूप कुमार मेंदीरत्ता, पूर्व न्यायाधीश, दिल्ली उच्च न्यायालय एवं पूर्व सचिव (कानूनी मामले), विधि एवं न्याय मंत्रालय ने विधि और तकनीकी के सम्मिलन पर गहन विचार प्रस्तुत करते हुए कार्यशाला को प्रेरणादायक बनाया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. रोमी बनर्जी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया और सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। यह राष्ट्रीय कार्यशाला भा.प्रौ.सं. जोधपुर और राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, जोधपुर के बीच एक सफल सहयोगात्मक पहल थी, जिसका उद्देश्य विधि और प्रौद्योगिकी के अभिसरण पर अंतःविषय संवाद को बढ़ावा देना और भविष्य की चुनौतियों के समाधान के लिए शोध एवं नीति निर्धारण में सहकार्य को प्रोत्साहित करना था। इस कार्यशाला ने न केवल विधि एवं तकनीकी क्षेत्रों के विशेषज्ञों को एक मंच पर लाया, बल्कि शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और छात्रों को भी नई दिशा में सोचने और नवाचार करने के लिए प्रेरित किया।

“कानून और प्रौद्योगिकी” विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला के दौरान मंच पर मुख्य अतिथि एवं निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर

कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न निवारण (पीओएसएच) अधिनियम, 2013 पर कार्यशाला

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने हाल ही में कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न निवारण (POSH) अधिनियम, 2013 के विषय पर एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का सफल आयोजन किया, जिसमें संस्थान ने सभी के लिए एक सम्मानजनक, समावेशी और सुरक्षित कार्यस्थल सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता को पुनः पुष्ट किया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व माननीय सर्वोच्च न्यायालय की अधिवक्ता सुश्री अपर्णा भट्ट ने किया, जिन्होंने लैंगिक अधिकारों, कार्यस्थल सुरक्षा और न्याय सुधार से जुड़े अपने प्रभावशाली और ज्ञानवर्धक विचार साझा किए, जिससे प्रतिभागियों में जागरूकता और संवेदनशीलता दोनों ही बढ़ीं। इस कार्यशाला में भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल और डॉ. रश्मि अग्रवाल ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया और संस्थागत उत्तरदायित्व के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि एक सुरक्षित और सम्मानजनक कार्यस्थल के निर्माण में हर स्तर पर सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। इस संवादमूलक सत्र ने न केवल यौन उत्पीड़न के खिलाफ जागरूकता बढ़ाई, बल्कि कार्यस्थल पर सकारात्मक बदलाव लाने के लिए आवश्यक नीतियों और व्यवहारिक कदमों पर भी प्रकाश डाला। इस पहल के माध्यम से भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने यह संदेश दिया कि संस्थान संवाद, जागरूकता और सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से एक सुरक्षित और समावेशी कल की ओर कदम बढ़ा रहा है, जहां हर व्यक्ति को बिना किसी भय या भेदभाव के सम्मान के साथ काम करने का अधिकार प्राप्त हो। इस कार्यक्रम ने कार्यस्थल सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक नई शुरुआत की और भविष्य में भी इस दिशा में निरंतर प्रयास जारी रखने की प्रतिबद्धता को मजबूत किया।

निदेशक महोदय द्वारा सुश्री अपर्णा भट्ट, अधिवक्ता का स्वागत एवं सम्मान। तत्पश्चात प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल, निदेशक, भा.प्रौ.सं. जोधपुर तथा माननीय सर्वोच्च न्यायालय की अधिवक्ता सुश्री अपर्णा भट्ट द्वारा उद्बोधन दिया गया।

न्यूरोमॉर्फिक और एज AI के लिए सर्किट्स और सिस्टम्स पर सीज़नल स्कूल

28 से 30 मार्च, 2025 तक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में आयोजित "IEEE सर्किट्स एंड सिस्टम्स सोसाइटी (CASS) सीज़नल स्कूल ऑन सर्किट्स एंड सिस्टम्स फॉर न्यूरोमॉर्फिक एंड एज AI" कार्यक्रम अत्यंत ज्ञानवर्धक और समृद्ध रहा। इस तीन दिवसीय स्कूल में प्रतिभागियों ने सर्किट्स, सिस्टम्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अत्याधुनिक संयोजन में गहराई से ज्ञान अर्जित किया और वैश्विक स्तर के विशेषज्ञों तथा अग्रणी शोधकर्ताओं से मूल्यवान सीख प्राप्त की। कार्यक्रम के मुख्य अंशों में न्यूरोमॉर्फिक कंप्यूटिंग पर विशेष ध्यान दिया गया, जो मस्तिष्क की जटिलता और प्रतिभा का अनुकरण करते हुए AI के भविष्य को आकार देने वाली एक क्रांतिकारी तकनीक के रूप में उभरी। साथ ही, एज AI सिस्टम्स पर व्याख्यान और चर्चा हुई, जिसमें रीयल-टाइम इंटेलिजेंस को डेटा स्रोत के निकट लाने की महत्वता पर बल दिया गया। प्रतिभागियों ने भारत के उभरते फाउंड्री-संचालित सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम की खोज के लिए पैनल चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया, जिससे इस क्षेत्र में देश की प्रगति और चुनौतियों पर गहन विचार-विमर्श हुआ। इसके अलावा, व्यावहारिक सत्रों के माध्यम से उपस्थित लोगों ने सिर्फ सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं प्राप्त किया, बल्कि अनुभव से सीखने और नवाचार की दिशा में सक्रिय रूप से प्रयास करने का भी अवसर पाया। पूरे कार्यक्रम का माहौल उत्साह, सहयोग और जिज्ञासा से परिपूर्ण रहा, जिसने इसे सभी के लिए एक यादगार और प्रभावशाली अनुभव बना दिया। इस आयोजन की सफलता में सभी वक्ताओं, आयोजकों और प्रतिभागियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिन्होंने मिलकर इसे एक सच्चा उत्सव बनाया, जो नवाचार, AI और अगली पीढ़ी की तकनीकों का उत्सव था।

कार्यशाला के दौरान मंच पर मुख्य अतिथि

कार्यशाला के दौरान समूह छायाचित्र

ई-सरल हिंदी वाक्य कोश

[world-class] DST has taken up the challenge to build a world-class R and D capability in quantum technologies.	[विश्व स्तरीय] डीएसटी ने क्वांटम प्रौद्योगिकियों में विश्व स्तरीय अनुसंधान एवं विकास की क्षमता तैयार करने की चुनौती स्वीकार की है।
[impact] The Principal Scientific Advisor to the Government of India stressed the global impact of quantum technology.	[प्रभाव] भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार ने क्वांटम प्रौद्योगिकी के वैश्विक प्रभाव पर जोर दिया।
[diverse] A University should allow for the diverse growth of knowledge	[विविध] विश्वविद्यालय को ज्ञान के विविध विकास की स्वतंत्रता देनी चाहिए।
[service campaign] These beneficial schemes are an extension of the service campaign that our government has been running.	[सेवा अभियान] ये लाभकारी योजनाएं हमारी सरकार द्वारा चलाये जा रहे सेवा अभियान का ही विस्तार हैं।
[financial assistance] Through this, direct financial assistance can now be provided to people from the marginalized community.	[वित्तीय सहायता] इसके माध्यम से अब हाशिए पर रहने वाले समुदाय के लोगों को सीधे वित्तीय सहायता प्रदान की जा सकेगी।

उपलब्धियाँ

अंतर्राष्ट्रीय गतिशीलता अनुदान

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने हाल ही में अपने आठ प्रतिष्ठित संकाय सदस्यों को अंतर्राष्ट्रीय मोबिलिटी अनुदान प्रदान कर एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल किया। इस अनुदान को संस्थान के निदेशक, प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल ने प्रत्येक संकाय सदस्य को उनके संबंधित क्षेत्र में वैश्विक विशेषज्ञों के साथ सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रदान किया, जिसकी कुल राशि ₹5 लाख थी। इस पहल का उद्देश्य भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के शोधकर्ताओं को विश्व स्तर पर अपनी प्रतिभा और अनुसंधान को बढ़ाने का अवसर देना और अंतःविषय नवाचार को प्रोत्साहित करना था। इस अनुदान के माध्यम से डॉ. नताशा थौदम ने धार्मिक अध्ययन और कॉमिक्स के क्षेत्र में लंदन के SOAS विश्वविद्यालय के प्रो. माइकल चार्नी के साथ सहयोग किया, जबकि डॉ. मोनिका दुबे ने स्टॉर्मवॉटर फ़िल्ट्रेशन में PFAS प्रतिधारण पर कोलोराडो स्कूल ऑफ़ माइन्स के प्रो. क्रिस हिगिंस के साथ कार्य किया। इसी प्रकार, डॉ. सुमित कमल ने जैव-आधारित केशिका माइक्रोरिएक्टर के विषय में नीदरलैंड्स की यूनिवर्सिटी ग्रोनिंगन के प्रो. जून यू के साथ मिलकर शोध किया। डॉ. आकांक्षा चौधरी ने खनन क्षेत्र और दीर्घायु असमानता के संदर्भ में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के डॉ. फ्रांसिस्को फरेरा के साथ अपना योगदान दिया। स्वच्छता एवं जल गुणवत्ता के क्षेत्र में डॉ. चंदना एन ने न्यू जर्सी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रोफेसर अर्जुन वेंकटेशन के साथ सहयोग किया। इसके अलावा, डॉ. क्रुणाल गंगावाने मधुकर ने संवहन में सोरेट और ड्यूफोर प्रभाव पर ऑस्ट्रेलिया के UNSW कैनबरा के प्रो. फैंग-बाओ तियान के साथ कार्य किया। डॉ. कुंतल सोम ने द्विस्तरीय अनुकूलन सिद्धांत के अध्ययन में साउथेम्प्टन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एलेन ज़ेम्कोहो के साथ सहयोग किया, जबकि डॉ. गणेश मांझी ने बिजनेस साइकिल मॉडलिंग पर लैंकेस्टर यूनिवर्सिटी के प्रो. लोरेंज़ा रॉसी और डॉ. स्टेफ़ानो फ़सानी के साथ मिलकर शोध कार्य संपन्न किया। यह सहयोग न केवल वैश्विक अनुसंधान साझेदारी को मजबूती प्रदान करता है, बल्कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर की अंतःविषय नवाचार और वैश्विक अनुसंधान उत्कृष्टता की प्रतिबद्धता को भी प्रतिबिंबित करता है। इस अनुदान ने संस्थान के संकाय सदस्यों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपने ज्ञान और शोध को साझा करने और बढ़ाने का अवसर प्रदान किया, जिससे संस्थान की वैज्ञानिक छवि और प्रभावशीलता को भी नया आयाम मिला।

डॉ. सुमित कमल
रासायनिक अभियांत्रिकी

डॉ. गणेश मांझी
एआई और डेटा साइंस स्कूल

डॉ. कुंतल सोम
गणित विभाग

डॉ. चंदना एन
सीईटीएसडी

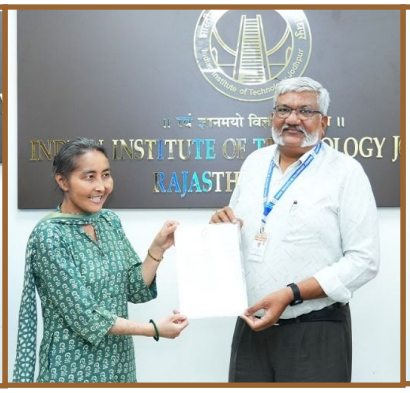

डॉ. नताशा थौदम
स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स

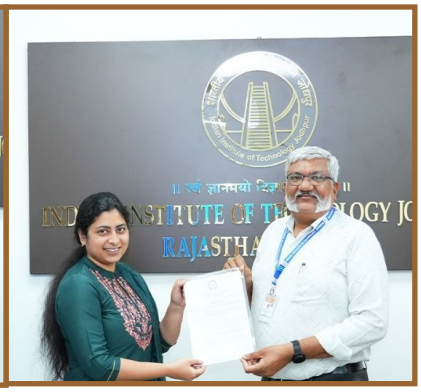

डॉ. मोनिका दुबे, सिविल और
अवसंरचना अभियांत्रिकी

डॉ. आकांक्षा चौधरी, स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स

"सही कार्य करो, भले ही वह लोकप्रिय न हो; समय तुम्हारा मूल्य समझाएगा।"

- रतन टाटा

उपलब्धियाँ

श्री सुधांशु शर्मा, पीएचडी स्कॉलर, सीईटीई, भा.प्रौ.सं. जोधपुर को माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों के लिए ऑडियो श्रेणी के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम पुरस्कार प्राप्त करने पर बधाई।

भा. प्रौ. सं. जोधपुर के शिक्षा प्रौद्योगिकी केंद्र के पीएचडी स्कॉलर श्री सुधांशु शर्मा ने 2024-25 की **अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ई-सामग्री प्रतियोगिता (AICEECC)** में माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों हेतु ऑडियो श्रेणी में **"सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम पुरस्कार"** प्राप्त कर संस्थान को गौरवान्वित किया। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता सीआईईटी, एनसीईआरटी द्वारा आयोजित की जाती है और देशभर में शैक्षिक सामग्री निर्माण में रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण मंच है। श्री शर्मा की ऑडियो सामग्री **"पञ्चमहाभूत"** ने भारतीय दर्शन के इस महत्वपूर्ण विषय को सरल, प्रभावशाली और रोचक तरीके से प्रस्तुत करते हुए निर्णायकों का दिल जीता। उनकी इस उपलब्धि ने न केवल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के शिक्षा प्रौद्योगिकी केंद्र की उत्कृष्टता और नवाचार को प्रदर्शित किया, बल्कि देश में डिजिटल शिक्षा और ई-लर्निंग सामग्री के विकास को भी नई दिशा दी। यह पुरस्कार शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण और रचनात्मक योगदान के लिए प्रेरणास्रोत साबित हुआ है।

भा.प्रौ.सं. जोधपुर के जैव विज्ञान और जैव अभियांत्रिकी विभाग के प्रोफेसर अमित मिश्रा को आईएनएसए एसोसिएट फेलो (आईएएफ) - 2025 के रूप में चुने जाने पर बधाई

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के जैव विज्ञान एवं जैव अभियांत्रिकी विभाग के प्रोफेसर अमित मिश्रा को वर्ष 2025 के लिए इंडियन नेशनल साइंस एकेडमी (INSA) द्वारा एसोसिएट फेलो (IAF) चुने जाने पर हार्दिक बधाई। यह सम्मान उन्हें न्यूरोडीजेनेरेटिव रोगों से जुड़े न्यूरोनल प्रोटीन गुणवत्ता नियंत्रण तंत्र पर किए गए उनके उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए प्रदान किया गया है। उनके अध्ययन ने गलत तरीके से मुड़े प्रोटीन के एकत्रीकरण से निपटने में E3 यूबिक्विटिन लिगेज की भूमिका को उजागर किया, जिससे प्रोटीन होमियोस्टेसिस और न्यूरोडीजेनेरेशन की समझ में महत्वपूर्ण योगदान मिला। यह उपलब्धि न केवल भा.प्रौ.सं. जोधपुर के वैज्ञानिक समुदाय के लिए गर्व का विषय है, बल्कि भारतीय वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रतिष्ठा को भी नई ऊँचाइयों तक पहुँचाती है।

डॉ. सुचरिता डे, आईएनएसए यंग एसोसिएट 2025 सहायक प्रोफेसर जैव विज्ञान और जैव अभियांत्रिकी विभाग भा.प्रौ.सं. जोधपुर को बधाई

डॉ. सुचारिता डे, जो भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के जैव विज्ञान एवं जैव अभियांत्रिकी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं, को वर्ष 2025 के लिए भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) द्वारा प्रतिष्ठित INSA यंग एसोसिएट्स (IYA) पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार वैज्ञानिक अनुसंधान में उत्कृष्टता और नवाचार को पहचानने के लिए दिया जाता है, और डॉ. डे की यह उपलब्धि भा.प्रौ.सं. जोधपुर के शोध क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई। उन्होंने होमो-ऑब्लिगोमेरिक प्रोटीन कॉम्प्लेक्स के प्रोटिओम-व्यापी पूर्वानुमान के लिए एक स्केलेबल AI/ML-आधारित रणनीति विकसित की, जिसके तहत सैकड़ों नए संयोजनों का पता चला, जिनमें से कई प्रयोगात्मक रूप से मान्य मेगाडाल्टन संरचनाएँ भी थीं। इस कार्य ने कम्प्यूटेशनल संरचनात्मक जीव विज्ञान और प्रोटिओमिक्स के क्षेत्र में एक बड़ी छलांग लगाई और जीवन विज्ञान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका को प्रभावशाली ढंग से उजागर किया। डॉ. डे की इस अनूठी सफलता ने न केवल भा.प्रौ.सं. जोधपुर के अनुसंधान क्षितिज को विस्तृत किया, बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय वैज्ञानिक समुदाय की प्रतिष्ठा को भी बढ़ाया। इस सम्मान ने उनके द्वारा किए गए कठोर परिश्रम, उत्कृष्टता और अनुसंधान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को मान्यता दी। डॉ. सुचारिता डे की यह उपलब्धि अन्य युवा वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी और भा.प्रौ.सं. जोधपुर में भविष्य के शोध कार्यों के लिए नए रास्ते खोले। पूरे संस्थान ने इस गौरवपूर्ण सम्मान पर उन्हें बधाई दी और उनके भविष्य के वैज्ञानिक प्रयासों की सफलता की कामना की।

ई-सरल हिंदी वाक्य कोश

[guarantee] Partnership of dreams of common citizens is the assurance of a bright future.	[आश्वासन] आम नागरिकों के सपनों की साझेदारी ही सुनहरे भविष्य का आश्वासन है।
[Lifestyle] It is poised to encourage Lifestyle for Environment on a grand scalecontributing to a better planet	[जीवनशैली] यह एक बेहतर ग्रह के निर्माण में योगदान करते हुए बड़े पैमाने पर पर्यावरण के लिए जीवनशैली को प्रोत्साहित करने के लिए तैयार है।
[Renewal fee] Renewal fee has been reduced.	[नवीनीकरण शुल्क] नवीनीकरण शुल्क कम कर दिया गया है।

ASME (अमेरिकन सोसाइटी ऑफ मैकेनिकल इंजीनियर्स) आंतरिक दहन इंजन पुरस्कार 2025

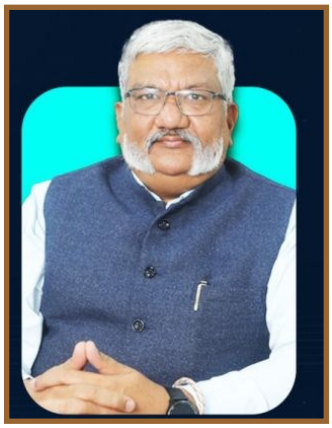

भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल को ASME इंजन अवार्ड 2025 मिलने पर हार्दिक बधाई।

भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल को वर्ष 2025 के लिए प्रतिष्ठित ASME (American Society of Mechanical Engineers) आंतरिक दहन इंजन पुरस्कार से सम्मानित किए जाने पर पूरे संस्थान ने गर्व व्यक्त किया। यह अंतरराष्ट्रीय स्तर का सम्मान उन्हें इंजन अनुसंधान, स्वच्छ और टिकाऊ ईंधन प्रौद्योगिकी तथा ऊर्जा दक्षता के क्षेत्र में किए गए उनके अभिनव और प्रभावशाली योगदान के लिए प्रदान किया गया है। प्रो. अग्रवाल के शोध कार्यों ने न केवल इंजीनियरिंग विज्ञान को नई दिशा दी है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की तकनीकी नेतृत्व क्षमता को भी सशक्त बनाया है। उनकी इस उपलब्धि ने भा.प्रौ.सं. जोधपुर की प्रतिष्ठा में उल्लेखनीय वृद्धि की है और संस्थान को अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में एक अग्रणी स्थान पर स्थापित किया है। यह गौरवपूर्ण उपलब्धि आने वाली पीढ़ियों के वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी है।

भारतीय भाषाओं में इंजीनियरिंग शिक्षण

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश के. अग्रवाल और संकाय सदस्य डॉ. राजलक्ष्मी चौहान ने तकनीकी शिक्षा में भारतीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा देने पर एक महत्वपूर्ण राय व्यक्त की, जो कि द हिंदू बिज़नेस लाइन में प्रकाशित हुई। इस लेख में उन्होंने बहुभाषी शिक्षा के माध्यम से इंजीनियरिंग शिक्षण में पूर्ण रूप से बदलाव लाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि भारतीय भाषाओं में शिक्षा से न केवल छात्रों की वैचारिक समझ गहरी होती है, बल्कि यह उन्हें तकनीकी ज्ञान को बेहतर ढंग से आत्मसात करने में भी मदद करती है। इस पहल से पूरे भारत में इंजीनियरिंग शिक्षा को अधिक समावेशी, सुलभ और प्रभावशाली बनाने की संभावनाएं बढ़ीं। प्रो. अग्रवाल और डॉ. चौहान ने यह भी उल्लेख किया कि बहुभाषी शिक्षण प्रणाली से छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अपने क्षेत्र में नवाचार और तकनीकी दक्षता के साथ योगदान देने में सक्षम होते हैं। इस दृष्टिकोण ने भारतीय तकनीकी शिक्षा के भविष्य की दिशा को नए सिरे से परिभाषित किया और इस विषय पर बहस को व्यापक स्तर पर प्रोत्साहित किया। भा.प्रौ.सं. जोधपुर द्वारा इस विषय पर दी गई यह पहल तकनीकी शिक्षा को देश के विभिन्न भाषाई समुदायों तक पहुंचाने में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुई।

व्यक्तिगत रचनाएँ

मौन को तोड़ें और चर्चा करें

"परिवर्तन की ओर पहला कदम जागरूकता है।"

हाल ही के वर्षों में मानसिक स्वास्थ्य के विषय ने आमजन के बीच चर्चा के रूप में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है, लेकिन इससे जुड़ी कलंक (स्टिग्मा) की भावना अभी भी हमारे समाज में गंभीर समस्या बनी हुई है। यह कलंक (स्टिग्मा) की भावना न केवल लोगों को समय पर सहायता लेने से रोकती है, वरन् लज्जा से ग्रसित मिथ्या विचारों का एक ऐसा वातावरण बनाती है जो मानसिक स्वास्थ्य के विषय पर चर्चा करना और दुष्कर कर देती है। इस चक्र को तोड़ने के लिए आज के वर्तमान समय में मानसिक स्वास्थ्य पर सही जागरूकता बढ़ाने और इसे जनसामान्य चर्चा का विषय बनाने की आवश्यकता है।

मानसिक स्वास्थ्य कलंक (स्टिग्मा) की भावना को समझना

कलंक (स्टिग्मा) की भावना का मतलब है वे नकारात्मक दृष्टिकोण, विशेष धारणाएँ, और पूर्वाग्रह जो समाज कुछ खास समूहों, परिस्थितियों या व्यवस्थाओं के बारे में रखता है। मानसिक स्वास्थ्य के विषय में, यह कलंक (स्टिग्मा) की भावना व्यक्ति विशेष से भेदभाव, उसके प्रति विशेष धारणा और अलगाव के रूप में सामने आती है। यह भावना मूलतः व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर होती है।

मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कलंक (स्टिग्मा) की भावना के दो मुख्य प्रकार होते हैं:

प्रथम. सार्वजनिक कलंक (स्टिग्मा) की भावना: जब समाज मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे व्यक्तियों के विषय में नकारात्मक विचार रखता है, जैसे उन्हें "कमज़ोर," "पागल," या "खतरनाक" समझना। ऐसे विशेषण सार्वजनिक कलंक (स्टिग्मा) की भावना वाली धारणा को बढ़ावा देते है जैसे की मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित लोग डरावने या उपेक्षा करने योग्य होते है।

द्वितीय. स्वयं के प्रति कलंक (स्टिग्मा) की भावना: जब लोग समाज द्वारा दी गई अनेक प्रकार की नकारात्मक धारणाओं को आत्मसात कर लेते हैं, तो वे खुद को निरर्थक या दोषपूर्ण समझने लगते हैं। यह व्यक्ति के आत्म-सम्मान को प्रभावित करता है, और संदेह की स्थिति को उत्पन्न करता है, जो व्यक्ति को पेशेवर के पास सहायता लेने से रोकता है, जिससे उसकी मानसिक स्थिति और ज्यादा नकरात्मक रूप से प्रभावित हो जाती है।

मानसिक स्वास्थ्य के प्रति मौन का मूल्य

कलंक (स्टिग्मा) की भावना के परिणाम गंभीर होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, अनुमानित रूप से हर आठ में से एक व्यक्ति विश्वभर में किसी न किसी मानसिक विकार से ग्रसित होता है, लेकिन इनमें से बहुत से लोग भय या भेदभाव के कारण सहायता नहीं लेते हैं। मानसिक समस्याओं को लेकर मौन का यह मान्यता सही उपचार में देरी, गंभीर विकारों के खतरे, और सबसे गंभीर स्थिति में आत्महत्या जैसी

समाज के बीच एक प्रमुख अवधारणा यह है कि मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधित समस्याएँ व्यक्तिगत कमजोरी का संकेत हैं, न कि चिकित्सा के क्षेत्र की समस्या, जिसे शारीरिक स्वास्थ्य की तरह गंभीरता से लिया जाना चाहिए। इस मिथ्या अवधारणा के कारण लोग सही समय पर सहायता लेने से बचते हैं, और शर्मिंदगी का चक्र चलता रहता है।

अधिक प्रगतिशील समाजों में भी कलंक की भावना का यह प्रभाव जारी है। संचार माध्यम जैसे की चलचित्र, रोमांचक कहानियों में मानसिक विकारों का चित्रण अक्सर हिंसक या अस्थिर व्यक्तियों के रूप में किया जाता है, जिससे समाज की भ्रान्ति और विकारों के प्रति भय स्वतः गंभीर होते जाते हैं। इससे पीड़ित व्यक्ति एकाकी अनुभव करता है और समाज से पृथक् हो जाता है, क्योंकि उसे भय होता है कि यदि वह अपनी समस्या या विकारों के विषय में वार्तालाप करेगा तो उसे बहिष्कृत किया जा सकता है।

कलंक (स्टिग्मा) की भावना से निपटना: जागरूकता और शिक्षा

मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी कलंक (स्टिग्मा) की भावना को खत्म करने के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक रूप की जागरूकता सबसे महत्वपूर्ण है। लोगों को मानसिक विकारों के बारे में यह अवगत कराना कि यह कोई व्यक्तिगत दोष नहीं, बल्कि चिकित्सा समस्याएँ हैं, स्वतः ही समझ और सहानुभूति पैदा करने में सहायता करेगा। इस दिशा में प्रयास किए जाने चाहिए कि मानसिक स्वास्थ्य की बात को सार्वजनिक और व्यक्तिगत जगहों पर सामान्य चर्चा का हिस्सा बनाया जाए। इस प्रकार के उपाय क्रमशः निम्नलिखित है।

प्रथम- मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी साक्षरता:- मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लक्षण, संकेत और उपचार के बारे में जानकारी देना लोगों को समय पर सहायता प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सकता है। इससे कई मिथक भी टूटेंगे, जैसे कि लोग अवसाद से "सिर्फ मन बना कर बाहर आ सकते हैं" या कि जिन लोगों को चिंता होती है, वे "अत्यधिक प्रतिक्रिया" कर रहे होते हैं।

द्वितीय- सामाजिक स्वीकार्यता को प्रोत्साहित करना:- लोगों को अपने मानसिक स्वास्थ्य से सम्बंधित अनुभवों के बारे में चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करने से इस मुद्दे को मानवीय दृष्टिकोण मिलता है और भय कम होता है। जब सार्वजनिक रूप से व्यक्ति और आम लोग अपनी अनुभव साझा करते हैं, तो वे कलंक (स्टिग्मा) की भावना की दीवार को तोड़ने में योगदान देते हैं और दिखाते हैं कि मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ सभी क्षेत्रों के लोगों को प्रभावित करती हैं।

तृतीय- भाषा और विशेषण को चुनौती देना: भाषा व्यक्ति और समाज के दृष्टिकोण को आकार देने में बड़ी भूमिका निभाती है। "पागल" या "सनकी" जैसी कलंकित भाषा का उपयोग नकारात्मक धारणाओं को दृढ़ कर सकता है। सम्मानजनक और सही शब्दावली को प्रोत्साहित करके, हम मानसिक स्वास्थ्य के प्रति अधिक सहयोगी और समावेशी वातावरण को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

चतुर्थ- समर्थनकारी कार्यस्थल:- मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी कलंक (स्टिग्मा) की भावना कार्यस्थलों में विशेष रूप से व्याप्त है, जहाँ कर्मचारी यह भय रखते हैं कि यदि वे अपनी समस्याएँ बताएंगे, तो उनकी नौकरी जा सकती है या उन्हें कम मौके मिल सकते हैं। ऐसे कार्यस्थलों का निर्माण करना जो मानसिक स्वास्थ्य के अनुकूल हों, सामाजिक स्वीकार्यता को बढ़ावा दें और संसाधन प्रदान करें, एक व्यापक परिवर्तन ला सकता है।

सहानुभूति और समझ की ओर बढ़ते कदम

यह सर्वविदित है कि नकारात्मक धारणाएँ बदलने में समय लगता है, लेकिन हर प्रयास मूल्यवान है। मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी शिक्षा को विद्यालयों में शैक्षिक स्तर पर समाहित करने से लेकर बड़े स्तर पर जागरूकता अभियानों के जरिए एवं समाज को एकजुट होकर कलंक (स्टिग्मा) की भावना को चुनौती देनी होगी। मानसिक स्वास्थ्य को शारीरिक स्वास्थ्य के बराबर महत्वपूर्ण मानते हुए, लोग बिना भय या लज्जा के उपचार की ओर बढ़ सकते हैं। आखिरकार, हमारा लक्ष्य एक ऐसे विश्व निर्माण का है जहाँ मानसिक स्वास्थ्य को समग्र स्वास्थ्य का अभिन्न अंश माना जाए, और लोग कलंक (स्टिग्मा) की भावना के बोझ से मुक्त होकर अपनी मानसिक स्वास्थ्य का ख्याल रख सकें, सहायता लेने में तनिक भी संकोच न करें, और गरिमा के साथ जीवन जी सकें।

एक नैदानिक मनोवैज्ञानिक और मानसिक स्वास्थ्य की समर्थक के रूप में, मैं सभी को यह परामर्श देना चाहता हूँ कि मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल उसी तरह करें जैसे आप शारीरिक स्वास्थ्य की करते हैं। आइए हम जागरूकता बढ़ाने, मिथ्या विचारों को चुनौती देने, और यह सुनिश्चित करने की दिशा में कार्य करें कि कोई भी व्यक्ति अपनी समस्याओं के साथ अकेला न हो।

धन्यवाद !

श्री आकाश विश्वकर्मा
नैदानिक मनोवैज्ञानिक (आरसीआई-पंजीकृत)
परामर्शदाता @ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर
राजस्थान राज्य समन्वयक, न्यूरो एवं बायोफीडबैक सोसाइटी इंडिया
राजस्थान-342037

डोकरी माई की बाई

जगाँ ही बीकानेर और दिल मे देशनोक की डोकरी माई।
साथ मे चालरी ही भारत पाकिस्तान की लड़ाई।।

तारीख ही दस मई, सुबह-सुबह जद थारी मां दुख पाई।
लेर गया तन अस्पताल मे, महेश भैया की गाड़ी बुलाई।।

घणों टेम तु कोन लगाई, थोड़ी देर मे नानी थारी बारे आई।
बधाई हो जवाईँ सा, बाईसा आई बाईसा आई।।

फोन आयो दादोसा को, पूछ्या काँई समाचार भाई।
समाचार चोखा हैं दादोसा, आपणै घरां चौथी पीढ़ी आई।।

टाबर का रोबा की जद आवाज़ कोनी आई।
पण जद तु महारे कन नज़र घुमाई, म्हारी जान में जान आई।।

ही तो तुं बस दो किला की , न रोई न मुस्कायी।
डॉक्टर कियो थोड़ी नाजुक हैं, अबार आ नर्सरी स्कूल जाई।।

दुख थारी माँ घणी पायी, देख थारी माँ ने म्हारे मन मे बेचैनी आई।
डॉक्टर ने पूछकर पेली थारी माँ न छुट्टी दराई।।

थारी माँ न जद थारी याद आई तो म्हार कन देखर बतलायी।
आप लेर आओ, म्हारी बाई कदे घरां आई।

आगले दिन पीबीएम मे जार, मामोसा तन छुट्टी दराई।
जद तन घरा ल्यायो तो पूरी कॉलोनी खिलखिलाई।।

नानो थारो बाँटी मिठाई, मासी पुरो घर न सजाई।
देखी जद तन थारी माँ तो बा भी जी भर कर हकलाई।।

तु चोखा स्कूल मं जाई, ज्यो मन मं है बा पाई।
थारी साथ हू प्रतिष्ठा मैं, करूं कोनी मैं ज्यादा बड़ाई।।

पंचायती बेजा लोगा ने लोग केवे तु हो जासी पराई,
थाने कांई पंचायती भाई, मै जानू, म्हारी छोरी जाने और जाने म्हारी लुगाई।।

धीरज सिंह खँगारोत
कनिष्ठ सहायक
रसायन अभियांत्रिकी
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर

सिंदूर की रेखा

जिस देश के नाम में ही **“माँ”** बसती है,
जहाँ हर पल **"भारत माता की जय"** बरसती है,
जिस धरती पर दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, की आरती सजती है,
उसी देश की नारी के सिंदूर पर दुश्मन की बुरी नज़र पड़ी।
वो जननी, अन्नपूर्णा, सरस्वती, सीता है, वो काली, दुर्गा, चण्डी है।
वो माँ पार्वती है — जिनके रुठने पे भोलेनाथ १०० बार झुके,
वो राधा है — जिनके प्रेम में श्रीकृष्ण खुद को भी भूले,
उस देवी के सिंदूर की क़ीमत अब उस देश को चुकानी है।
कल उस नारी का सिंदूर बहा —अब दुश्मन का खून बहेगा।
ये नए युग का भारत है, जहाँ **"तेजस"** का तेज है,
"आकाश" में गरजते भारतीय सेना का प्रहार है ,
"अस्त्र" करेगा विनाश तब,
श्री कृष्णा का **"सुदर्शन"** चक्र चलेगा जब।
"अर्जुन" की आँख में अब केवल लक्ष्य है,
"पृथ्वी" से निकलती है **"अग्नि"** की लपट,
ये नया भारत है — जहाँ **"धनुष"** ही संकल्प है, और वही प्रहार है।
अब बात **"शमशेर"** की है, जो तलवार न्याय के लिए उठती है।
"त्रिशूल" और **"नाग"** —शिव की चेतना के साथ है ,
"अरिहंत" शत्रुओं का संहार करने को तैयार है,
और सीमा पार जब जवान उतरता है —
तो **"रुद्र"** बनकर प्रलय लाता है।
इन सब से ऊपर,
१४० करोड़ हिंदुस्तानियों का विश्वास एवं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का साथ है।

भारत माता की जय!

जय हिंद
दिव्यांशी धावन
शोध विद्यार्थी
शिक्षा और प्रौद्योगिकी केंद्र (CET)
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर

वो जो हर दिन दो ज़िंदगी जीती है

कितनी नपी-तुली,
दिनचर्या होगी उसकी,
जो रोटी बनाने के बाद,
रोटी कमाने जाती होगी...
सुबकती अलार्म की आवाज़ पर,
नींद से समझौता करती होगी,
बच्चों के टिफिन में प्यार भरकर,
अपने सपनों को टालती होगी।
घर के कोनों में सजे सपने,
हर सुबह फिर से छुपाती होगी,
चाय की चुस्की के संग-संग,
कल की थकान भुलाती होगी।
ऑफिस की राहें हों या मीटिंग की घड़ियाँ,
हर मोड़ पर मुस्कान सजाती होगी,
ऊँची एड़ी में सधे क़दमों से,
अपने वजूद को थामे चलती होगी।
शाम ढले जब लौटे घर,
फिर माँ, बहू, पत्नी बन जाती होगी,
थकान के नीचे दबी हुई,
फिर भी सबसे पहले मुस्कराती होगी।
कहने को 'सुपरवुमन' है वो,
पर वो भी कभी थक जाती होगी,
बस दो पल की राहत की ख़ातिर,
अपनी दुनिया को सुलाती होगी।

प्रीतिंदर कौर
सहायक कुलसचिव
आईआईटीजे कनेक्ट
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर

संघर्ष

सन्नाटा हर राह है, दिख रहा अंधकार है,
संकट का पहाड़ है, चट्टानों का भरमार है,
लगता चोट हर बार है,
फिर भी कर रहा प्रहार है |
न कुछ खोने का भय, बस पाने का इंतजार है,
पसरा खुशियों पर तुषार है, हाथों में हथियार है,
हँस रहा संसार है,
फिर भी कर रहा प्रहार है |
आज समय को बुखार है, किस्मत भी बीमार है,
साथ छोड़ खड़ा यार है, पर गिरी नहीं तलवार है,
अब भी कर रहा प्रहार है,
अब भी कर रहा प्रहार है |

पल्लव प्रिंस
भूतपूर्व छात्र
M.Tech. CSE (AI)

अप्रैल से जून 2025 के दौरान संस्थान में शामिल होने वाले संकाय सदस्य

क्रम संख्या	नाम	पद	विभाग / कार्यालय
1.	योगेश्वर नाथ मिश्रा	सहायक प्रोफेसर	भौतिक विज्ञान विभाग
2.	हिमांशु दवे	सहायक प्रोफेसर	यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग
3.	सोनी	सहायक प्रोफेसर	लिबरल आर्ट्स स्कूल
4.	सुनील कुमार खिजवानिया	प्रोफेसर	भौतिक विज्ञान विभाग
5.	सुमीत राजेश खन्ना	सहायक प्रोफेसर	यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग
6.	जितेंद्र कुमार	सहायक प्रोफेसर	भौतिक विज्ञान और धातुकर्म और सामग्री अभियांत्रिकी विभाग (संयुक्त नियुक्ति)
7.	विश्वनाथन रामचंद्रन	सहायक प्रोफेसर	विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
8.	गगन विक्रम केवलरमानी	सहायक प्रोफेसर	यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग
9.	राहुल गेरा	सहायक प्रोफेसर	रसायन विज्ञान विभाग
10.	लता पंवार	सहायक प्रोफेसर	भौतिक विज्ञान विभाग
11.	मगेश नागराजन	सहायक प्रोफेसर	प्रबंधन एवं उद्यमिता स्कूल
12.	सिद्धार्थ शर्मा	सहायक प्रोफेसर	कंप्यूटर विज्ञान और अभियांत्रिकी विभाग
13.	मनोज गुप्ता	सहायक प्रोफेसर	विद्युत अभियांत्रिकी विभाग

अप्रैल से जून 2025 के दौरान संस्थान में शामिल होने वाले कर्मचारी सदस्य

क्रम संख्या	नाम	पद	विभाग / कार्यालय
1.	मनीष	वरिष्ठ सहायक	भर्ती कार्यालय (गैर संकाय)
2.	विक्रम कुमार	वर्कशॉप मैनेजर	यात्रिकी अभियांत्रिकी विभाग
3.	आशा राम मीणा	वरिष्ठ सहायक	विद्यार्थी कार्यालय
4.	अविनाश कुमार	अधिष्ठाता	उप निदेशक कार्यालय + पीएचसी
5.	पवन शर्मा	वरिष्ठ सहायक	क्रय एवं भंडार कार्यालय
6.	यशपाल सिंह सोलंकी	वरिष्ठ सहायक	लेखा कार्यालय
7.	सचिन रोगानी	वरिष्ठ सहायक	स्थापना कार्यालय (गैर संकाय)
8.	राकेश कुमार शर्मा	वरिष्ठ सहायक	सुरक्षा कार्यालय
9.	पोक्कुरी रमेश	वरिष्ठ सहायक	शैक्षणिक कार्यालय
10.	वीर बहादुर सिंह	वरिष्ठ सहायक	एकीकृत सूचना प्रणाली (IIS) - प्रभाग
11.	राजेंद्र कुमार मीणा	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	एकीकृत सूचना प्रणाली (IIS) - प्रभाग
12.	मिस्टर आदित्य पांडे	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	एस.ए.आई.डी.ई.
13.	सुश्री लक्ष्मी चौधरी	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	जैव विज्ञान एवं जैव अभियांत्रिकी विभाग
14.	मिस्टर सरन ओमर	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	गणित विभाग विभाग
15.	मिस्टर विक्रम सिंह	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	यात्रिकी अभियांत्रिकी विभाग
16.	मिस्टर मुकेश राजपुरोहित	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	रसायन विज्ञान विभाग विभाग
17.	मिस्टर पंकज कुमार	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
18.	अंजीबाबू गोनुगुंटला	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	धातुकर्म और सामग्री अभियांत्रिकी विभाग
19.	मिस्टर सनोज कुमार	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
20.	योगेश शर्मा	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	धातुकर्म और सामग्री अभियांत्रिकी विभाग
21.	मिस्टर अनिल कुमार बरनवाल	कनिष्ठ तकनीकी अधिष्ठाता	अवसंरचना अभियांत्रिकी कार्यालय
22.	राहुल शर्मा	कनिष्ठ तकनीकी अधिष्ठाता	अवसंरचना अभियांत्रिकी कार्यालय
23.	शुभम कुमार गोस्वामी	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	कंप्यूटर विज्ञान और अभियांत्रिकी विभाग
24.	चंदन कुमार मेहरा	सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर	विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
25.	मनीष कुमार साह	कनिष्ठ इंजीनियर (सिविल)	विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
26.	पीयूष बजाज	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	क्रय एवं भंडार कार्यालय
27.	निलेश कुमार झा	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
28.	लोहित कुमार बुंदेल	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	कंप्यूटर केंद्र
29.	इशिका साहू	कनिष्ठ तकनीकी सहायक	कंप्यूटर केंद्र
30.	रमेश मीसला	तकनीकी अधिष्ठाता	विद्युत अभियांत्रिकी विभाग

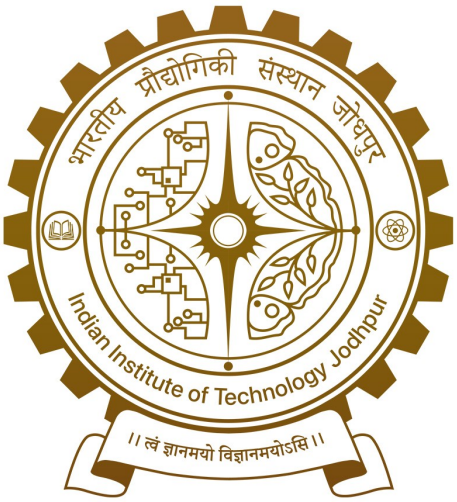

अप्रैल - जून 2025 | अंक - 09

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर